तर्ज: ये बंधन तो प्यार का बंधन है

सब मे हो भाईचारा, बहे मन मे प्यार कि धारा
हर देश के हर मानव को, लगे मानव प्यारा प्यारा
(के) मिलजुल कर $$, सभीने रेहना है
मिशन का ये $$, केहना है...||ध0||

हर मानव के घट मे, रहता है भगवन
मानव कि पूजा करे,मन मे हो ये लगन
मानव के रब को जाने, हम सबको अपना माने
एकता को अपना कर के, खुशियो के गाये तराने
(के) मिलजुल कर $$, सभी ने..||1||

गलती से भी ना करे, किसी से तक़रार
हर मानव से हम करे, संतो प्यार हि प्यार
जिसे प्यार है करना आता,वो सबके मन को भाता
तो प्यार से आओ संतो, खुशहाल करे हर नाता
(के) मिलजुल कर $$, सभी ने..||2||

मुर्शद दिलं से चाहता, मानव रहे खुशाल
"परशुरामा" हम चले, मानवता कि चाल
गुरुमत को हम अपनाये, नेकी के कर्म कमाये
समिप गुरु के हम सब, गुण मानवता के गाये
(के) मिलजुल कर $$, सभी ने..||3||

कवी: परशराम कारंडे (समिप)